



१ ई आर्यकुमाराय नमः सर्व
 वृष्टिर्कांमम ॐ कुरु कुरु
 लकुयः माहयः
 वन्दयः हं रुद्र स्वर
 ॐ व महा एव जाय
 ॐ व सिद्धि वत्त दधुः
 ५ आ व म कु या नां ॥
 वरुणागिनिः वरुणा ता हि आर्यता
 ता वा म कु ॥

म



ॐ नमो गवत म शे आ कृ मा न र ता
 १ य वाधि सु व य म स स हा य म हा
 १ का र्त्तु नि जाय ॥ ग य था ॥ ३ अ न
 १ र्य वि न र्तः शु क वि शु क उ म क नि
 १ वि उ म ध निः उ म ले वि म ले ॥ ३
 १ य वा हि नि रु रु य त हं हं हं रु रु
 १ रु रु रु रु हा हा ॥ य ३ रु मा धि
 १ र नी धि ग य रु वा य य रुः स
 १ मु का ग य रु ॥ स म धि वि नि रु
 १ सु ता रु व निः रु रु शु ग अ म रु
 १ प रि रु द्रा निः रु क वा लं ड चालि
 १ मा शु रु क ल्य का नि स वि ॥ रु

१ उं नमः श्रीमदायिताग यन्मः॥
 २ गुमत्यागत्र केन न्य नानाधु
 १ विनाजिग॥ ना ना दुमत्रगकि रु
 १ नाना पंक्ति नि कृतिग॥ नाना निरु
 १ तरे कात्रे नाना मृग समा कृतेः ना
 १ ना कृत्तम जागिति संमगां दधिवा
 १ सिग॥ नाना हय रुता यन वद्यु जी
 १ निखली कि नु ले मधू ता बां ही
 १ गिः मनुवा तलं संकुलः सिद्धि विद्या
 १ धत्रगले मध्वं ज्वनि नादिनः
 १ मुनिरि कीत गा ले ज्वः सतगं सुनि
 १ गु विगः वाधि सतगले ज्व ज्येष्ठ
 १ ~~ममं सुनि ज्व विग~~

॥ ५॥

१ दज र मि ज्व ले त पिः आर्यना
 १ नादि रि द्वे वे वि या ना उ स ह सु
 १ केः को रु ता उ ग ले ज्व न्य ह य
 १ गु वादि रि वृगः सर्व सख दि गा
 १ यु का र ग वा न व लो कि गः विर
 १ हा न त रु गु मां प म ग र्ग स न कि
 १ गः मह ग न व सा यु का से त्या व
 १ कृ ग या विगः धर्म दि द ग न त्या
 १ क म ह लां द व प र्ष दिः न गु व
 १ विरु मा ग स व रु वा लि म ला व
 १ लेः प न म कृ प या यु कः प्र वृ कृ
 १ य व लो कि गः न रु ता न ग तिं ता
 १ नि ग रु वा घु नृ सं क टः सि र न्य

मिमूयसत्ताष्टमयाः संसातगतवं
 । साः संसातके पाहो गगनवृत्तमा
 । मयेः मृचक सर्वसत्तास्तु कुरुहि
 । मलाभनेः भवं मृकं जगत्त्राप्यसंग्र
 । मानवलोकि तः उवाच मधुगावाः
 । निवर्जवालिपुष्पाधिना जृष्टुगुष्ठ
 । कृताञ्जु जृमिता रसतयनः पुलि
 । धनं वल्लभस्य त्राममाहा लोका
 । मागत्रह साहाकरुण्य नृथायता
 । जगत्तुङ्गता उदितदिपुसंकाभ
 । पृष्ठद्वन्द्वनपुलाः तप्तयकिः
 । ज्ञे सांसातादवास्तुमान्वा न
 । कम्पयन्किण्ठया लोका कुशवे

नयज्जगत्तुङ्गता नः जीलोत्पत्ता
 के तादवा माहे म्माहे त्रिकुव
 । वै । जगत्तुङ्गता लभ्यया जृहं
 । ह्यादिता त्रिभैः कान्ता त्रिभुसं
 । पातनाः जाना रयसमा कुरुते ॥
 । स्मृतम्भदवनामानि सत्वा नत्र
 । क्राम्यते सदा । गत्रयिष्याम्यहं
 । नाथं नाना रयमहा र्ववा ॥
 । गत्रयिष्यामि मां लोकं गयकिं मृ
 । निपुगवाः कृताञ्जलिपुटा रत्ना
 । गत्रसाध्यं सदा त्रिभुः जलनि
 । ज्ञे गतिरुग्राह्यं दवचनं मववा
 । तः नामाद्विगतं कुरुहि त्रिभु

१। किं तत्र यः दण्डरसि ज्वरे नाथे वाधिस
१। त्वमहधिक्षेः सर्वपापहन्तं पूषः मागत्य
१। कृत्स्निवर्धनः अयनागण्डनवससु
१। वसवसुखावहः। गेहि आस्थापकं च
१। वसवसुखविर्वर्धनमपि नालं चासत
१। नो गत्की रुयमहाभूतः उवं मुके धर
१। गवानुग्रहसत्रवलोकितः खवलौ
१। कदिजः सुर्वानुमेयासु गमयाद्
१। गमदति शक्रे मूकं च पूषले क
१। लसल्लिगः गमुवाच महाप्राक् साध
१। साधुमहागप॥ नामाकुं सुमहाश
१। गसर्वसुखे कवत्सलः मानि संकिं
१। मनुजाः सम्यक् सुखयेत्यताः सर्व
१। व्याधिविनिमुक्ता सर्वश्चर्य गुण

मिताः अकालमूकनिदग्धज्व
तायमि सुखावतिः। गमहंसं प्रव
तामि दवसंघाः गुणमथम्यः अमू
मादत्तमथमधर्मरविद्यधंसुनि
स्ववृता ॥ • ॥ शांतावन्पसुलोच
नतात्रगाता तव्य सर्वसत्यानुवपिनि
सर्वसत्यनामिनिः सहसु रजं सहसु
नेगुः उं नमो तगवते अवलो कय २
मां सर्वसत्यानां च हं रुद स्वाहा ॥
उतात्रगुतात्रगुत्र स्वाहाः उं सिद्ध सु
सिद्ध शुद्ध वि शुद्ध सुगता नमः
गी हृदयनिर्मलं गममस्या मत्रपि
महाप्राक् पुवत्रयि रविताः अवता
कितमहाश्रीन्दि वि ज्वरुपि महाव

१ लोः ॐ कल्याणि महागजा लोकध
१ प्रिमहायसाः सत्रसग वि अलो
१ क्रि प्रहा गु वृद्धि वृद्धि निः धृति दा
१ पुस्ति दा स्वाहा ॥ ॐ का ना का
१ मत्रु वि ना सर्व स त्रि ता यू का संग
१ मा गत्र ली कथा पु ह्य वा न मि ता द
१ यी आ र्य गा ना म ना त्र मां : इन्द्र रि
१ अं वि नि यु स्म वि धा ना हि प्रियं व
१ दाः च यो न ना महा लो रि अ जि ता
१ पि न वा स साः महा मा या महा उव
१ ना महा य ले य ना कु मीः महा त्री दि
१ महा वन्दि इ क स त्र नि स्र न्य नि ॥
१ पु स्ता ना अ न्क रू पा यः वि क था य को
१ लें न प्र हाः वि शु मा नि अ जि स्व प्री

१ व की या पि यु ता यू धः इ म्फ नि
१ रु म्फ नि का ली का ल ना गी नी ज
१ व नीः न रु ली मा हि नी ज म ना ।
१ का ना दा वि गी गु लाः प्र म्फ नि व
१ द मा ना व गु स्ता व गु ह्य वा सि नीः
१ मां ग ल्या अं क लि ता स्ता ना त व दा
१ म नी रु वाः का पा त्रि ली क महा ला
१ गा सं ध्या स ग्गा व ना जि ता हा थ
१ वा रु क्वा दृ ष्टि न क मार्ग पु द र्ग
१ वि व र दा सा अ नि ज म नि स्त्री त्र
१ पा मि त वि कु माः अ व त्रि था ग्नी सि
१ आ व ल्ता ली अ म्फ ना ध्र वा ध न्या
१ पु स्ता महा ला गा सु हा गा प्रिय द

१ जिनीः कुगांगराहनीलीमाउगाउ
१ गुमतागवाः ३ गदिकदिगीयुकास
१ गंन्याएकिवत्सनावागिअत्रिजि
१ वाअस्मानिणासर्वगसानगासुर्वा
१ धीसाधनीएडागाफिअपिधन
१ ददाः अएयागोमिपूष्माः श्रीम
१ लोकेअतोमक्रोमितामामगुः
१ लभनगसर्वसापत्रिपुत्रिलीः उतात्र
१ कृपावलनिष्कअवत्रलिस्वाहाः
१ नामाहातुत्रेअतकंतकीमिगह
१ तडतमं १ तहस्यमएगगुहंदवा
१ नामपिइल्लं १ सलग्यकईसर्व
१ किविषनासनं १ सर्वयाधिपुमम
१ नंसर्वसहस्रत्वावरं १ त्रिकालय

१ पृथ्वीमां करिस्त्रायसमाहि
१ १५ः सावित्रमवकांलेनरायजि
१ यमवापूयाग ॥ ३४ स्त्रितस्यसूत्रि
१ निषंदलिक्षधनवान्तरवे ॥ ३
१ गकैवसहाग्राहीमधवीचनस
१ यः वधनासूयगवकीयवहात्र
१ ३३ जोएवतमहाग्राहमधवीच
१ नंशयः वधनासूयगवकीय
१ वहाले ३ जोएवत ॥ गगुवामेगया
१ किदिनअपिदुष्टिनसंगामसं
१ कतइत्यनानाएयसमृद्धिग
१ स्मत्रलभदेवनामानिसर्वहियाअ
१ पाहमिः नाकालमृत्कैएवंगिग्रा
१ प्राप्तिविपुलंमिर्वः मानूष्यसरु

१ तं ज म्मि त्क स्य म हात्म नं ॥ यस्मि दे
१ प्रा न रु का य मा न व ॥ की र्त्तु पि व्य मि ॥
१ स दि र्घ का ल मा यु सा वि यो व ले र
१ ग न त ॥ द वा ना गा रु ध य रु ग न्ध
१ की क ट पु ग ना ॥ पि ज्म वा ना रु सि र
१ मा ग ना रौ ड ग रु सा ॥ अ कि न्या स्ना न
१ का पु ग ॥ रु डो लो न्या म हा ग हा ॥
१ कु या प त स्ना न का रु चे व रु ग का
१ की द का द य ॥ व ना अ जि च वू का पु
१ ध्या य वा न्य इ रु च ग सा ॥ कु या म
१ पि न सं व कि किं पु न ग स्य वि गृ हं ॥
१ इ रु स त्या न वा ध रु धा ध या ना म
१ क म ति ज्म स र्व ज्म र्थ ग ल्म यू का
१ पु ग प्रो ग्रे ज्म व रु ग ॥ अ गि स्म ना र

१ व द्दी मां कृ ति नं पि य द र्ज नं ॥
१ पि मि मां वा नि स र्व ता रु वि ज्म ले
१ द ॥ क ल्या ण मि ग सं स्य वा वा चि
१ स त्य वि र वि ग ॥ स दा वि त दि ना
१ वू डे य ग य गी स्य पु य ग ॥ रु गि
१ अ म दा गी आ र्थ ग ना ना म धे न
१ नि र दू त्रि का या ना मा रु रु त स
१ ग रु वू ड रु वि नं प त्रि स मा क ॥
१ व लु म हा ना व रु रु रु रु रु रु ॥
१ स्वा यु व सि पु ॥ लु डा रु ॥ सिं ग सि ॥
१ र्व व त ॥ अ ग दा त रि स्यं रु य ॥
१ ग रु रु रु ॥ आ दि नं म इ रु रु रु ॥

१ॐ नमः श्री चन्द्र महाशय नमः॥
१ श्रीमत्पुष्पकविनायक सर्वसत्त्वका
१ त्रिलिः नमो विद्यापसंस्तकाय त्रि
१ यकम्कयं कर्तुं देवस्य कय सर्व
१ नोपायलवधये॥ वामपुर्ण जल
१ यनगर्जनिजकपाजने सफपा
१ गत्रपाताकुसुमवासायदजिन्॥
१ जकपुष्पापात्रलान्नमः॥
१ सर्वदुर्जिनैरमोक्तैः कृत्वा
१ कविनैः वामज्ञानये॥ मात्रपु
१ हात्रसंस्तानसर्वपादाय नमः॥
१ मन्त्रयेन कुरुतावत्रमिदं माहा-
१ काशाय॥ पुष्पापात्रविल

१ गल्लुक्कवनेयकं समुदीपितं
१ कृत्वा चन्द्रसमायमायपुष्पवः
१ श्रीवज्रसत्त्वस्य॥ सायनत्वेन
१ साधनाय जगति यकपुलाति
१ कृति॥ गगनामंत्रगाथा॥ विष्णुमो
१ रुदिनजमल्लग्नहंकात्रवी
१ यादुवंदहारिः पत्रवीणीतध
१ त्रमलयागाहं सपताः॥ उर्ध्व
१ मासायिताजितदक्षिणकत्रपा
१ जकृगयागलः वन्द्यो वत्रव
१ चन्द्रमहालाबलकोटमुदाहंसदा॥
१ ॐ नमः श्री चन्द्र महाशय नमः॥
१ उर्ध्वको वन्द्यवन्द्यवन्द्यवन्द्य

१ क ह र प्र सु त य र प्र सु त य र ह न र
१ ग ह र व न्ध य र क म य र ल म य र
१ मा ह य र स र्व ग क म मू र्ध व न्ध न
१ क र र स र्व ग कि नी यां ग ह र क
१ पि ग म ग य या घु य क नी सं ग ग
१ य र म र र मा त य र र र र क व न्ध
१ म हा त्रा व ल मा हा प य गि ॥ उं उं उं
१ व न्ध म हा त्रा व ल हं हं हं रु र रु र
१ रु र स्वा ल ॥ उं व न्ध म हा त्रा व ल
१ य य घा ट य र स र्व इ का य न्द्रा ली
१ प त्रि वा त्रा न की ल य र हं रु र ॥ य
१ ये व य म व र न क व र न न त्रा न
१ त्रा क सा न न्द्र नि त्रा न णी म न्द्रा

१ व न्ध : उं उं उं उं उं उं उं उं उं
१ थि यो न : उं व की ल ना की ल ना
१ यो नि वि घृ त ला व य त् ॥ व ल्गु ण
१ त्रा नि त्रा ला सां क ल पु न व क स ला
१ ल म का र ला वा म्वा दि क्क उ न ला
१ व य त् ॥ उं वा म्बु ॥ कि र र प त्रा
१ कि र क्क क्क क्क न त्रा र ला ला ॥ उं गि
१ ग व ल्गु म हा त्रा व ल स मा दि ह
१ द य स मा फ ॥
१ उं व ल्गु म हा स न ग स र र्व र्व र्वा
१ हि र सा व य र मा ल य र हं रु र ॥ उं
१ स र्व मा न तं उ य हं रु र ॥ उं उं म म
१ य न सा व सा हं रु र ॥ उं ॥

[illegible]

ॐ हं ३ पं ३ मथ ३ कल ३ काल य ३
 १. अथ य ३ माल य ३ इ व लु म हा ना
 १ व ल हं ३ ५ ॥ इ विलि ३ मिलि ३ ललि
 १ ग हं ३ ५ ॥ इ व ३ का रु हा की हं ३ ५
 १ ३ ॥ ॥ अथ १० ८ ॥
 अथ म ३ रु का या ना मृ द य या य
 १ वलि वि यं ३ ५ ॥ न का वि यं ३ ५
 अथ सर्व लि य ना म ॥ अथ ॥ र ग ॥ पु न ॥
 पि अ व ॥ सर्व लि य ना म ॥ वा अ
 दो र व ॥ वा कि ली ॥ अं कि ली ॥ दा र
 ना अ ॥ नी ज्व व र व ॥ स प वा दि ॥

१ धर्मगोत्रायान्तरहरे रगवनि ।
 १ हरे रगवनि हन हन दह दह
 १ पव पव मथ मथ मथ २ ५ नर
 १ वि ५ नर सर्ववि धुवि नायकानां सर्व
 १ सत्र नः सर्व इहानः सर्वग्रहानः रुत
 १ यस्तो गयः तं जनि विध्वंसयः सर्व
 १ सत्र नगगुहृदूहा मस्त्रि उका
 १ अलिनिः तैला क मथ निरु २ मां व
 १ त रचिलि रचुल र कल र किलि रकु
 १ तृ २ मूच २ जृ सहा सः तामयगु जय
 १ वृद्ध सत्य धर्म संघ सत्यः सत्य वादि नि
 १ वृद्धः धर्मः संघः सत्य न मातिक म सत्य
 १ वादि नि सत्यः मातिक मः तन्यादलिक
 १ उर क कुप २ य २ रूड मानयः विपु

मानयः वदु स्यी मा नयः तैला क
 दि पणि मानयः सर्व ऊ ऊ गा ऊ सा ऊ क
 का डम हात्र गादि मानयः मा त ऊ २
 न जा पयः वृत् २ पृथ मा ली नी ल ध २
 ६ न २ ६ मि २ ६ क मि मृ मि पु सि न्या कां
 द नं कलिः हल हल हलि र हृ २ ५ २
 ह २ लिन मलि ज मू धं २ वृ ध व ला ।
 किलः त ऊ २ मां सर्व ग थ ग गा वला कि
 प स्वा हा ॥ उ गु ग गा ऊ पु ला हा ग मा य
 स्वा हा ॥ उ व न्हा क वि म ले स्वा हा ॥
 उ सर्व ग्र हा न व ऊ पु ध्मा मि कलि स्वा हा ॥
 त ऊ २ मां सर्व स य स्वा हा ॥ उ मि गु धु
 जोग क मृ लि ना म ध नि स मा क ॥

ॐ नमः ४ श्रीगुरुकाया ॥ श्रीधर्मपिंडन
॥ गोचरायः सहस्रगुरुसः धनरक्त
॥ नरपुङ्गवः प्रियतमः यशस्विलेख
॥ नरपुङ्गवः सहस्ररक्तः रक्तः रक्तः वयः
॥ गाययः मातयः सर्वरुहः सत्काना
॥ नागानांः नागनागाः सद्योः नाग
॥ स्वकिंलयरः गुरुतं गुरुतं नागयः
॥ गुरुमां गुरुमां नागयः पद्मानं
॥ नागयः प्रिहमां नागयः पद्म
॥ सात्रिनां पद्मानं नागयः प्रव
॥ सर्वनागनागयः ५ काहिकंः
॥ काहिकं काहिकं वतुर्धमिकंः
॥ नासिकं मासादं नासिकंः सास्य
॥ कलिकं प्रवसर्वनागनागयः

विनागयः वातिकं येति कं
॥ गुरुमिकं सात्रियातिकं मासाह
॥ नासिकं प्रवसर्वनागनागयः
॥ यः विनागयः कुरुकस्यः ५
॥ गुरुनागयः कामार्थं गुरुमिकं कुरु
॥ ४ वृद्धिकं कुरु ४ सासाहिकं मित्रा
॥ हिरेकस्य सर्वनागपुत्रमविना
॥ मध्वनलीसमाक ॥

सुकावरमविचारमारुघरमां
माध्याजगतयाविनीः मध्य
रजाध्यायकाद्ययुह

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं
हूं हूं हूं श्री नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ श्री
ॐ वं हूं ॥ - ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सुखं सान्धं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
नित्यं ॥ सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
वा सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
वासुदेवाय नमः ॥ नमो नमो
नित्यं ॥ सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं
ठि लि गी र्ग ला वः सा यं नृणां दि
नाथं ॥ नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो ॥

नमो नृप नाथाय ॥ १ ॥
 बुद्धा गले च त्रीहृदि ज्वरमु
 रूजो वीर्यं च प्राणान् तथा
 वैजं ह्यजं जितं स्यात् ॥ २ ॥
 निधनं सिंहा नना स्यात् न नो
 जं दीनं वृद्धं दृढं गवा दनं त्रि
 गा गो नायकं त्वं गुरुः स्वर्गं नृ
 प्यं कुरु त्वं स्यात् वरुणं तं नाथं
 नमः सर्वदा ॥

उं नमः शिवाय संसारायः ॥ पूर्ववत्
टिफिदि. अ-याननननं हुं कात्राहव
योगि। नीगलनायकं. हेलवंकालि
नाति नंकेः कर्हि कासूर्यागेपतिमि
ना पुवन्नुमहाकायकृष्णार्कहनि
गार्ककं. वष्टुगिउतासुसस
कादगतिशायनजलामकृष्टवत्र
वीलं विष्णुवर्जिष्टवष्टुमिहाउ
छाकलात्राहं. सयावसहसदा
नीलापनारकहनिगकमेवच. स
पाउतेगासमिनामहागोडागसरा
सचः हेत्रास्यगतिवधः सयावस
यागयाः अत्राधिकयथाक्रमं ॥

उदिवमदिहसु केवजाजिकुनक्तिश्रु
तं. दि. जतुयथाक्रमं. पत्राकुक्ति
वागंकेतिश्रुलरिहिनन्दमृगलं. व
क्रमरुद्रित्रीकागजालिपुपालकं
अंस्वकाहात्रकं. दलि कामपुपिह
कागयाः काकपत्राकुविजात्रजमि
कृष्टववत्र॥ तंउकादर्वलमविष्णु
गुलावालिहृष्टसज्जकत्राहनिगदंव
हतीउउऊनकालिकाकवधलोजी
गैलंकेहेत्रवष्टुयउक्रमान्॥ वा
मयलंहटदकमृमलंकावकयाः
लकं. वनूषद्योगपुलकंउपिदमिग
ऊनीमथापु. पूलमालाजग्वतामित्रा

गानाधुत्रिका॥ लोके दुका दु चर्म
केलवमके वगालिका आदना वि
निका ह्ये मगुरुली न ह केः के
काले कालिका निक मकुवर्क सु
मवर्किकः अनिज्वर कीत्रक च
काजपूतक पूतकः शुचिपुका च व
लिक मयवृजा क जल धाः न वं
क्रमगविष्णु यादा सफिरा रा ४ का
पंथ मुद्रा कुगा एतदां च ना ऊ पंगर
धुः सग मुद्रु मालिका ये क न पूत
ना मत्रय या पुवर्मा निव स ना रा
मा वली च ग्रा क मा ॥ न स्या गगु म हा
देवी वज्र वा ता ही गा ट धाः हि उ जा

सर्वकर्षि ववामक पात्र के धा ता व ऊ
घ ४ लो एत व लो लि ग म हा ता गा न
ना मिती उ क व के मु क के म च न मा
एत क व र्मि केः मुद्रु मा ला जि गा गि
वा धां गात्र धा र्क ता जि ल सि क पा ल
चः दि वा ग न्धा मू ला गि लि ना पुत्र क
पूता दि बु दि वा ज म्मा म र वि धी ॥ व
वा ला एत र ल पु न ला एत र ल गि न ग
जा व ल या दि ल म या दि ल म य दि कि
म हा ग ऊ य न म उ च ती ॥ पु ज्ञा पा य स
र्या द च सर्व स न्धि व दि गृ हा हेतू क
क ले उ व दि स्तू त के वि ला व य गः न वं
न पं तु म हा व ज हेतू के कु वि ला व य गः

सर्वसत्तासंज्ञायुक्तं: मातृसिद्धिं
चदहिमः गताकायवाकसक्तः
उंजाः कायवाकसिद्धवज्रं
रुद्र॥ उं वज्रवाताही महादेवीहं
रुद्र॥ मृतमनु॥ उं आवजहं
रुद्रकहं जाकिनी जालसम्भ
नंस्याहा॥ उं उं उं सर्ववृद्धजाकि
नी वज्रवैलायनी यहं हं हं रुद्र
रुद्र रुद्र स्याहा॥ ॐ मित्रा महास
मरुदयसमाफ॥ पूरुहदयव
मया मातृमं: च न उ न ग मं का
न रुद्रा जाकिनी रुद्र॥

उं न मातृ गवतु न्यायं वज्रं वताहि।
याः ४ श्री गवतु विद्या महाविद्या
मयुक्तं महागुके ज्योतीदकी: महासा
या महं ज्योती: पुलाकसं हन यवा: ॥
लोके रुद्रा गवतु ४ गुके काममयी
मा: महासायति विद्या: प्रेलाके ४
जसनी विद्या: पुपययं महं ज्योती: य
षां विज्ञातमातृया: विद्यायासाधके ज्य
नी: सदवग-वर्गगण: सवजासुत्रमा
नृषा: विद्याधरपिसा याना: नात्र सो नक्ष
किन्नरा न: वसमानयति रतानि: ॥ जल
जो रुद्र न जां निचा॥ माहे ज्योत्यं कती विद्या
रुद्रु जालकलिलुथा: माहिनी रुद्र
नी ज्येव विद्यायाठनादि जं: वग्धा

कर्वणकं ऊं तं आ न क वि ध कु उ ह
तानः पठि ना कू रू ग वि ध्याः वा चा सि
हि ये सा ध नः न ऊ ध दु गं त स्या नो
पु वा सा वि चि य गः नृ कुं जा गो र वः
सि धिः द वी स ए व द म्य हं म नुं ग व
म हा मा याः स र्व उ त्ता क सा ध नः पु
व डा मि म हा या गीः दि य त्र कु च वं
कि रिः ॥ ग य थं ॥ उं न मा र ग व लीः
व ऊ वा ता हीः आ र्य प त्रा जि ग र्ते ला क
मा ग तः मा हा वि यः स र्व ए ग त या व ह
म हा व र्ज व जा स नः नृ प त्रा जि गः व न
क त्रि न पु डा म त्रिः वि ष अ ष लि
ग ष नि क्रो ट नि वि ष क त्रा त्रि ली स
लीः मा त्र लि स पु री द नि प त्रा वि ऊ य
ऊं य

नृ मु नि रु मु नि मा ह मि व ऊ वा ता
हि मु हा या गी जी वा म ग य गी र व र्ज
ग त्री ॥ ग य थं ॥ पा ग र ह न र प्रा ष
नृ कि कि नि ॥ सिं वि नीः धू न र व ऊ ह स
अ ष व र व द्यो ग क या त्र अ त्रि नि म हा
वि जि ग मां स सा नि ग मा नू षा नूः पा र्ग
सा र्ज न त गी न मा रा गु रि ग अ त्रि नी
सं मु नि सूं र ह न र प्रा ष नूः स र्व पा प
स सा नांः स र्व प र्ज नां मां स कुं द निः क्री
ध निः क्री ध मू र्ज ड म्हा क त्रा त्रि नि म
हा मू डाः आ ह नृ क द व स्या गु म हि वी
स ह म गि त्रः स ह मु वा ह वः ग ग स ह आ
नृ नृ कृ त्रि ग ग रू सः आ ता मृ शि पिं ग
ल गी व न व र्ज ग त्रि त्रः व र्ज स नि मि लि

मिमिलिरहंरहंरखरधूरधूररमूरर
जुद्धेगमहायाजिलीपठिगसिद्धिउं
उंउंउंउंउंहंहंलीमःहसरवीनःहाहा
हाहाहंहंउंलीकविनासिनिःगगस
हमुकाठिगधगगपत्रिकात्रिगहंरु
सिहृयःस्वगजत्रयगगुलाकादने
महासमुद्रलोषनःगसरहंरुद्वी
गोद्विगहंरहंरमहापञ्चनांमाहनी
यागगत्रिहंःजकिनीःलोकांनां
वदनिसयःपुण्यकात्रिलीहंरुद्वी
सगगसलिमहावीनःपत्रमसिद्धिगु
मज्जतीयहंरुद्वीरस्वाहा॥ ० ॥
पुण्यासाधनहवतिःसामग्रहसूर्य

ग्रहवाग्रहमपञ्चग॥ ५ कविजगि
वागानुप्रवर्तयतु॥ नमः४सिद्धोएवति
यावदावर्तयतिनवन्मिसहजुनन
गम्यतेसकृद्विवात्रिगनाकर्षयतिमा
नयतिःकुधवेगसाडवाठनःविद्ध
षण्णसकृन्वक्रुतेः००स्वावसा०
कसुमंसकृगपत्रिजयाकोजकिप
वृद्धदीनांदर्जयतु॥ ७मज्जनांगारे
सकृद्वपतु॥ राहगुमनगत्रवात्रि
पवदाहंदजयगिमयूरपिकुकेस
कृत्रपुमाकाशजामयतु॥ पुनर
पंसमयतिःगर्कशसकृद्वफावउ
दिजकिपतुःचतुरंगंवरंदर्जयति

मयूत्रपिचुकं विप विरंगुमयः पुष्प
नयनं कृगं एव नीलिमहा मायावर्ज
वाताही नाम अत्र नीलिमाफ ॥ ० ॥
उं न मा ए ग व ग ज्ञा र्थ आ व सु अ ग वः
दिव्य रूपी सु रूपी च सोम्य रूपि वर पु
दाः व सु च ती व सु अत्री वः व सु अ
आ क लि वा ला च त नी अ त नी अ नाः
अ त अ ए कि व स त्रा पु स पा त मि ना
द वीः पु स आ वृ डि व र्क वीः वि श च
नी जि वा अ स्मा अ मं सर्व गु मा रु काः
ग रू नी ग रू नी द वीः वि श दाने ज्व त
ज्व त्रीः ए वि त ए ग मा ग वः सर्वा ए
त ए ए वि नीः इ अ न गु त नी ली मा

उं ग उं गु व रा कु मा ॥ दान पात्र मि ना द
वीः व र्क वी दि व रू पी नीः नि ध नी स
व मां ग त्या कि लि ले अ य ग स एः
द ह नी मा त नी च नी ज व ली सर्व मा रु
पु काः कु गं गं गु म नी ली माः की मा
नी वि ज्व रू पि नी ॥ वी र्थ पा त मि ना द
वीः अ ग दान द त्रा च नीः ना व सी उं गु
रू पी व मृ डि सि डि व र पु दा दान पु
अ म हा ए ग अ डि न डि न वि कु मा
अ ग दे कं हि ना वि श्याः स ग्रा म ना त नी
स ए गः आ कि पा त मि ना द वीः अ त
नी अ न अ पि नी य अ नी प अ अ
नी व य मा त न मा स नीः अ व रू पी म
स ग आ हे म व र्क पु ल क नी वि ना म

सिधनादवीः पुहापुस्तक धात्रणी।
निधनं कुहमात्रुहाः धायागात्रध
नपियाः पुं धाउकमहाप्रादीः दिवा
हमल हासिलीः मावरी सर्वकुशांना
नलधामे अत्र अत्रिः अत्रयताएव
नोदवीः लालाएव विवर्जिताः वेल
यकिविनेयनः सविती कुमकुंड
नीः लिनिनी सर्वमात्राधः सकृपा
गत्र श्री धनीः ब्राह्मणी वेदमात्राच
पुं क्रमात्र धेवाजिनीः सत्रस्वलि
विष्णुमात्राः वउवुक्रविहात्रिणी
गाथापरिमहा रंम्याः वहीली धर्म
धामिनीः कर्म धामे धर्म विद्या

विष्णुकोलाग्रमधुलीः वाधनी स
र्वमात्रां यो धांगकृणुतामनीः धा
मीदिभुक्ति संवत्ताः लक्ष्मीदयला
विनीः सर्वार्थमाधनी एताः स्त्रिया मि
त्रविष्णुमाः दर्भनी वृद्धमात्राः नष्ट
मार्गवृद्धमनीः बागी अत्रि महाधमकि
गायी धाणी धनं ददाः स्त्री त्रुं धात्रणी
सिधः धाणि लीयागमी अत्रिः मनाह
लो महाकाकि अत्रगात्रिचद अत्रिः
सार्धवाह कृपावृष्टिः सर्वता धागताम
कीः नमस्ते इत्यु महादवीः सर्वसुखाध
दायनीः नमोस्तु दिव्यतृयीचः वसुंधा
मानमास्तुतः लक्ष्मी नं गार्ध नमस्तु
कोल युवपदि मां प्राप्तामिति यमसिद्धि

मिषिगं सुसन्नात्रयं यदहं न क
नं पापं ज्यनं गयी सुदात्रुनः गस
वडु पायिवाणिः सत्रमदि एउ
कः ज्यवागित समं स सजा
मि सत्रा एवमः प्रिय ज्यदयवा के
ज्यत्रय वा नु प्रिय द जनेः विपुत्र
प्रियकृतेषुः ज्यदय मृप जायमः
ज्यनं राम ज्यत्रपाकं प ज्यत्पा
कं सुखा व निः नि ज्यवसु
रा ज्यमा सी कुत्र गग कं वृद्ध ग
मिगं समाक ॥ ७ ॥

१३ नमः ४७ वसुधैव कुटुम्बकम्
धनं जीवसुधैव कुटुम्बकम्
यनसाधनं ४७ सुखाया कुटीगा
यः धनं त्रिगाया उ सदा देसि
गायय्यवाफायः प्रवर्द्धिगा
नूमादिगा ४७ ज्यन्याखा वि
सुत्रनेवः ज्यपुका ज्यय न
ज्यनमः ज्यनमी सर्ववृक्षानां
वसुधैव कुटुम्बकम् ज्यनमी सर्व
विद्यविनासा नमः सयात्रि
कुनिसुडनीः ज्यसुम्या स
वृद्धानां महाविद्यावसु

प्रियाः दत्तिडव्याधिः शका
एतेः नृपतनिकदाचनः
अचिकिगानिडव्यानिः प्रा
पूवन्निनसंशयः ॥ यनवि
ज्ञातमात्रेन सर्वसंपत्ति
मापूयात ॥ नविहं धनि
दयायाः व्याधिना व्याधि
गाहयेत ॥ अपुगुलयेत
पूयः धने धन्यादिकं म
हत ॥ महाधन्यामहा
गंधसपन्नपत्रिउधद

यः ॥ किमनुवहनाकून
इष्टाप्रपन्नमत्रनीः यः
धकविधिनायनयुगं वा
पयधमत्रमग ॥ कृष्टुला
उपदमास्यः एतियाति
धिसाहनं यप ० वस्
धमत्रि ॥ स्वाहातपनमा
यतः धनत्रलादिडव्य
वः लखननागसंशयः ॥
कुठिनी धमत्रनीरुलं व
सुधमत्रादया ॥ ७४ ॥

१३ नमः श्रीवज्रवाताहीये
नमः॥ ॥ वज्रवाताही
महाविद्या गन्तुदिधना
क कर्म पूजा विधि महं
कतिष्ठः वं वज्र वाताही
यनमः॥ ॐ स्वस्ति वा
ताही देवी महाविद्या
मालामन्त्रः श्रीवज्रवा
ताही देवी वज्रवाताही
महाविद्या स्वरूपिनिः
श्रीकृष्ण तनीवीर्जतत्वं

प्रयवापिनीः प्रिमुजा
भक्तिः मम सकलपूजा
र्थः सिद्धिर्धृतिपवित्रि
यागः न्यासं व पूर्वकं कृ
त्वा न वगदनकत्रं
श्रीवज्रवाताहीरक्ताज
पदकाग्रमानमः सान्वि
कं ताज संवेव गामसंति
उत्तमसकं गामसंभक्त
समनः कृत्या रतगदाप
हं॥ ॥ अथ न्यासः॥

ॐ उं ह सकृदयत्नमः॥
ताहाय॥ ॥ ॐ उं कृ
नामिकाय स्वाहा॥ ॐ
लानिया॥ ॥ ॐ उं न न व
मध्यमाय वाषट्॥ गिल
सधिया॥ ॥ ॐ उं पत्रग
न्याय चं॥ कपालसधि
य॥ ॐ उं उं ॐ उं कृदय व व
त॥ मिखास॥ ॥ ॐ उं कृ
त्रगनाय ॐ रु॥ सर्वा॥
ॐ उं उं उं उं उं हं सं नू
नमः॥

ॐ उं कृ मन्त्रितस्य स्वाहा॥
कपालसधिया॥ ॥ ॐ उं
नववाषट्॥ गिलस॥ ॥
ॐ उं यत्नके उ वाय हं॥ ॐ
सपनधिया॥ ॥ ॐ उं न
कृदयरु॥ सर्वा॥ त्वत्ती
ॐ नृधं नूनय सर्ववदव
दाद्रपात्रगमः ॐ नंतस्य
पुवकामिः ॐ सर्वकामपुसा
धनं॥ ॥ ॐ उं उं उं उं
लियं रु॥ स्वाहा॥ ॥

विष्णवे॥
ॐ नमः॥ ॐ श्री वागही पा
मं कृष्णपत्राणां च त्रक
कायं च विदुः कं ६ को ला
स्या वाहयादवी ध्यानपू
ष्यं नमस्तुते॥ ॥ नमः
यपान॥ ॐ ह्रीं श्रीं हं हं का
लागिनी कृष्णविष्णुना
मयं हं रुद्र॥ ॥ धूप॥
ॐ हं वागही त्रगला कं २
ज्वगत्र २ श्रीं हं रुद्र
स्या हा॥ ॥ ध्यान॥ ॐ वा

गाही त्रका म्व हं मवदना
नृक म्वाति नृग वउ हं
जा॥ मूलरजाणां विदुपा
ग्रं वृष्णपत्राणां च त्रक
अरुद्रक धात्रिणीः महि
षवाहनी॥ ॥ मन्त्र॥ ॐ
हं रुद्रवागही ये हं रुद्र
स्या हा॥ ॥ ॐ हं उल्का ये हं
हं रुद्र स्या हा॥ ॥ पाद्या
दिपूष्यं नमः॥ ॐ श्री मन्त्र
श्री वागही देवी त्रका त्र

कायवाद्यावमनार्घ्य
गिरुस्वाहा॥ उ० उल्काय
वत्रगकमत्रत्यपाद्याव
मनार्घ्यगिरुस्वाहा॥
स्वानवाय॥ उ० रुं रुं द वा
राहीनुम० स्वाहा॥ उ० क
पालते लवायनम० स्वा
हा॥ उ० बी उ य च उ न म०
स्वाहा॥ उ० य म देवगा
यनम० स्वाहा॥ उ० कृति
क ना ग रा जायनम०

स्वाहा॥ उ० न का म्यत्रक
गयनम० स्वाहा॥ उ० मी
ननाथयनम० स्वाहा॥
उ० वृद्धकायनम० स्वा
हा॥ उ० ग क र स्म ४ म नाय
नम० स्वाहा॥ उ० उल्का द
वगायनम० स्वाहा॥ ॥
वडन॥ उ० द उ वा रा ही य
त्रक व ड न न म० ॥ पू
जाला स्वा तु गि गा तु॥ उ० वा
रा ही म हि र वा तू टा॥ त्रक

व
वल्गुतितायनाः मीमी
नां कुंभधराहस्त। वात्रा
हीवनमस्तुत॥ उं उल्का
लिकामहाल्काल्का। वा
मिनीमनुमातृकाः
सोत्रमातासोत्रेणार्थ
त्रयनित्यननित्यता॥
वति॥ उं ठकाहीच
नधात्रयधरात्री।
मीनां कुंभधरात्री। पु
निपुणं दं वति॥ ग

इं स्वस्वस्वाहिं वात्रा
हीरुं रुट् स्वाहा॥ ० ॥
अत्रमदलपित्र॥ वडन
वस्तु पुष्पनेवद्यादि॥ ॥
गाय॥ उं वात्राही धात्रका
प्रितककणीमहाद्री
उष्ठाकलात्रगमीता। वा
त्रार्कत्रकावनी। कपाल
मालात्रनी। विचित्रपुष्प
अहिता। महामही वमा
गूढा। कलिता। तिसमप्र

ल०॥ मीनाकृष्णकलिका
 व० अ० हाताएत्र न र व
 नि० गिने गुं कलि तं देहं
 इष्ट गप्य न विग्रहं ॥ २ ॥
 काम्यत्र द्युस्तिगानि
 त्पं० वृत्तवृद्ध नि समा
 ष्टप्य० दक्षिणपी० स्ति
 गानित्पं० कालरूपी न
 मास्तुते ॥ ॥ उ० मील
 कायपहाते उं० मदिषा
 पत्रिस्तुति०० यमदण्ड

कता धर्म्यं श्री कृष्णार्जुन
नमाम्यहं॥ ॥ उँ स्वस्ति
वर्त्मन् महातेजः॥ उँ नमः
श्री गुरुभ्यामाचार्यकाय॥ उँ व
क्रायनी पीतवर्णीया॥
मारुग्वती स्वत वर्त्तिका,
की मातीत्रक सन्निरा,
वेङ्कवी स्पाम वर्त्तियनम
वाताहीत्रक वर्त्तिका॥ उँ
नायनी कुंकुम वर्त्तिका,
चामूआपा पुसन्निराच

महालक्ष्मी वरक वरनि
का॥ सिंचिनि स्वतयनू
वः व्याधिनीपी तयनूकं
कृष्णवर्णकृष्णपालदेव
देवी गले ध्वजो॥ नाना
रत्नमणिमालाध्वजः नाना
त्रिलोकमणिमालाध्वजः
दीर्घास्तिता देवाः नमा
मि देवता गले ॥ नमः
~~ममकविनामवागुरु~~
ध्वजनि

यत्र पूजितं सर्वं पुकि
सूक्ति पुदापयन॥ सा
प्रपा ० उर्वनिर्णयः शुद्धा
यूक्त नयन सा॥ तेन रा
जन लोक स्पष्ट कृत दे
वता गले ॥ राग ध्वज
विनामवागुरु ध्वजनि
सदा रवेता॥ उर्वकं च
उतं पंयं ध्वजः मातृकावी
उदेवताः सेवा पूजा महं
निर्णयः मातृका ध्वज नमा

महं॥ जृष्टकुरुंति गाद
यी॥ जृष्टवृद्धनिवाणि
नी॥ जृष्टते लव संयुक्तं
मातृकाष्टो नमा महं॥
उं उल्कास्त्रिका म हास्त्रिका
लाना सिनी म तु मातृ
का ॥ सोत्रसा ता सोत्रला
प्यत्रिषा निस्य न निस्य
गा ॥ उं जृष्टिगां ग रं ग व
वेवः व अर्थक्रिह ते ल
वः उल्कास्त्रिका लव वेवः क

पालिटी वनसुधा॥ सं
हाल वैव जृष्टवः ते लवा
व नमस्तुते॥ स्वस्थान
स्वाचिका त्रा ठवः स्व स्व
रूपी स्ववीर्यका ॥ स्व स्व
कार्यं वृवर्तने॥ दिवा
करीक र मिषा दहादि
कुरु कुरु पाला ठवः कुरु गवे
व व तु दहा॥ पंचा हा कुरु
पालं वः कुरु पालं नमा
स्तुते॥ नाथ नाथ महा

नाथः आदिनाथ महात्म
नाः शीनाथ सिद्धिनाथ
वः मीननाथ नमोस्तुते
कृष्णनाथ वषी ० ऊँ दी
पनाथ महात्मना पुन
नाथ वरतरे वः वक्रनाथ
नमोस्तुते ननुनाथ न
वनाथ कृष्णनाथ
मूलमं सफाविंशति
पंचांगः शीनाथीति न
मोस्तुते ॥ सर्वेषां नाथ

सिद्धानां सत्कानां वक्र
तात्पर्यं यागसंयतं
वीरं तत्सर्ववत्तमोस्तुते
७ का कालगिकालयं य
प० किनतास्तुतः वठि
त्यसर्वस्मात्तमः प्राप्ता
तिथियमूलमं ॥ नाथ
यत्तमः कविनालिः ना
थयेदिद्यदेवता नाथ
यत्तमः लहं ~~कालं~~ नाथ

नामयद्दुष्टवर्द्धनं॥
नामयद्देवदात्रिडं॥ना
मयडिपमूढमं॥ना
मयदग्नि योत्रादि॥ना
मयसर्वविघ्नतः॥ना
मयसर्वविषधात्रं॥ना
मयदहिरात्रनी॥ना
मयसर्वधुक्कालि॥ना
मयसर्ववीरुके॥आ
युतामो गधमेव यः च
न धन्यः विवर्द्धनं॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थं
यत्नमो गाय मूढमं
मृद्धि सिद्धिं यं लक्ष्मीं
विद्या तां ह्यसृणान्वितां
प्राप्तामि विवसत्यं॥ यः
प० लं शु लं सु वं॥ • ॥
ॐ नमो भूतमातृका
णी पत्रम्यष्टवत्रपत्रम्यष्ट
ता देवदेवी सुवता गुं सु
माफ॥ • ॥ दानपतिग

गमरुगस्य न शीवजावा
पममगुदेवताउनामा
याः शीपत्रम्यध्वत्रीद
क्षिणदिगलारुधविता
जितशीवजावाताहीप
त्रम्यध्वत्रीएकालक
सिद्धिस्तुष्टुसन्ने
वातातुष्टु॥ शीममदे
वताउनामायाः दाता
सुत्रीजनसहितसु
सर्वीत्रिस्तुष्टुमन्त्रे॥

ॐ हउन्मनिवापूर्वजन्म
निवाः उन्मजन्माकृतेषु
सकृत्तजन्मापाजित
माहापातकादिउपपा
तकद्वयत्वं॥ गउल्लत
ॐ हउन्मः ममशीदेवता
उनामायाः ग्रहणमवला
तः उन्मस्तुल्लग्नआदिपा
दिनवगुहदधमत्रिस्तु
धमन्त्रेजितिदधमयां

उत्कादयमत्रिष्टुदासः उ
संवाचिकस्तु कलानां प
कापं धनादिभ्यदाता
दिकानां विजागं सा
रुमण्यविवादं सहदेव
वेत ॥ ७ ॥ तदा षनिवात
मर्थः मम ग्रादेव ताज
नाम्ना यामना कामना
पत्रिपूर्णां पुतापा
यावृद्धे धर्मः

मप्रतिनां प्रणि सुख
रुलप्राप्ति कामनार्थः भ
रुत्तिपत्रस्तीनदणनि
रुत्ता प्राप्तिरुत्तिधि
रुत्त सुवृद्धि प्राप्ति
ॐ रुत्त मे मत्रिगायत्रा
गोत्त सुखेण व्यर्थः स
फविद्धि धनधन्यादि
उत्त व्यर्थः रुत्त प्राप्ति
कामनार्थः सकलतन्मा

सिद्धि मन्त्र सिद्धि या कसि
द्वि कृया कर्मसि सकल
सिद्धि उपपन्न मन्त्रा ध
गण पा अर्चन सकल
सिद्धि रूत प्रा फर्थि जय
साग मनवां कृत ध सं
प्राप्ति कामना र्थि ता उ
मान्य ला क मान्य ता उ स
राम ध सकल या कसि
ध र्थि सकल श्रु नि या

सिद्धि मन्त्र सिद्धि या कसि
द्वि कृया कर्मसि सकल
सिद्धि उपपन्न मन्त्रा ध
गण पा अर्चन सकल
सिद्धि रूत प्रा फर्थि जय
साग मनवां कृत ध सं
प्राप्ति कामना र्थि ता उ
मान्य ला क मान्य ता उ स
राम ध सकल या कसि
ध र्थि सकल श्रु नि या

तन्मर्थः। अस्मिन्दिने। ताड
मंडलं वागमयं यथा
पिसंगम्य। सूरूपनाग
ताजायिताजिनताड
निधस्ताने। ताडताजा
रथसुरवेस्यपरुलता
फिकामलन। स्नान
दानसंपूर्णार्थपूना
पि। गीवजवाताहिदे
वीसस्ताने। गीवज

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
वाजाहीमृतमनु। उल्का
दग्धमिस्त्रुग्धमिक। म
रु। अष्टगंतजवधमन
~~सकलेभ्यः~~ जपतपम
को। अत्रलपोर्विबन्धदि
मातृकासुवगाग्रांदिम
कलगर्भकठासिधधर्षि
अष्टगन्धपूष्यधूपदीप
नेवद्यादिं स पूजासंपूर्ण
तत्सर्वविधिपत्रपूना
नमस्तु॥ नमो नमि

मम गी दयता जय लवही
नं लकि ही नं कृया हि नं
प्रसिद्ध गी पत्र मंगवती
नगाना मिदु मस्वा ग
यमाह स म प या ड
स कृपया ॥ ॥ सत्य
त १०२४ मितिः ज्वि
क ज व व दिः द्विगिया
मंगल तया ल ॥ १४ कृकं
निस्यां ताजानि पसि

मा ७ कृया डीः श्री वजवा
गही देवी या के स्व वा या
नाइल ॥ श्री देवता जया
उल्का द गम लग य ह या
गम वतेः ज्वमस्ताने
गनि ग्वल द गम लग य
इ या डी ॥ १४ गम क्रिया
यका तन स ॥ १४ पूजा वि
अन वा ता ही देवी या ७
मकादिं पा ० दय का त या ५

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लो

ग्रीवमु

नकुचमु

कूट

शंख

कण्ठ

ग्रीव

शिरः

मुख

नासिका

शिरः

मुख

नासिका

शिरः

मुख

नासिका

ग्रीवमु नकुचमु कूट शंख कण्ठ ग्रीव शिरः मुख नासिका शिरः मुख नासिका शिरः मुख नासिका



ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ

ॐ वा वाः
ॐ



129